

“संधि”

“ दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को संधि कहते हैं।”

संघि का अर्थ = मेल या संयोग

उदाहरण : देवर्षि = देव + ऋषि

$$\downarrow$$
$$अ + ऋ$$

संधि के प्रकार - 03 होते हैं।

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

### 1. स्वर संधि :

दो स्वरों के मेल से (पास-पास आने से) जो संधि होती है। उसे स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि में स्वर + स्वर मिलते हैं।

पहला जो स्वर होगा वो आपको मात्रा के रूप में मिलेगा और दूसरा स्वर मूल रूप में मिलेगा।

## 11 स्वर लक्ष्यः

अ आ

इ ई, ए, उ ऊ,

ए ऐ, ओ, औ

1

2

3

स्वर संधि के प्रकार : 5

1. दीर्घ संधि
2. यण संधि
3. गुण संधि
4. अयादि संधि
5. वृद्धि संधि

1. दीर्घ संधि :

यदि प्रथम शब्द के अन्त में ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर अ, इ, उ, ऋ में से कोई एक वर्ण हो और द्वितीय शब्द के शुरु में उसी का समान वर्ण हो तो दोनों के स्थान पर एक दीर्घ हो जाता है।

दीर्घ संधि

1. अ/आ + अ/आ = आ
2. इ/ई + इ/ई = ई
3. उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ
4. ऋ + ऋ = ऋ

(a) अ + अ = आ

शब्द + अर्थ = शब्दार्थ

राम + अवतार = रामवतार

सूर्य + अस्त = सूर्यास्त

सत्य + अर्थी = सत्यार्थी

गीत + अंजलि = गीतांजलि

मुक्ता + अवली = मुक्तावली

(b) अ + आ = आ

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

विद्या + आलय = विद्यालय

परम + आत्मा = परमात्मा

गर्भ + अध्यान = गर्भाध्यान

(c) इ/ई + इ/ई = इ

कपीश  $\Rightarrow$  कपि + ईश  
 $\downarrow$   $\downarrow$   
प् + ई + ई  
 $\downarrow$   
पी

रवीन्द्र  $\Rightarrow$  रवि + इन्द्र  
 $\downarrow$   $\downarrow$   
व् + इ + इ  
 $\downarrow$   
वी

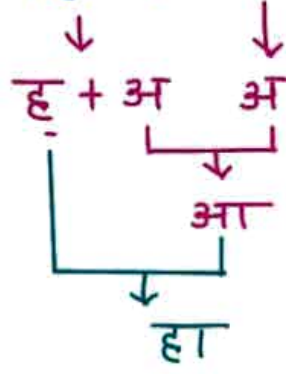
प्रतीक्षा = प्रति + ईक्षा  
 $\downarrow$   $\downarrow$   
उपसर्ग देखना प्रत्यय

अधीक्षक = अधि + ईक्षक

अभीप्सा = अभि + ईप्सा



महाधिवक्ता = महा + अधिवक्ता



• प्रतीति = प्रति + इति

महती + इच्छा = महतीच्छा

गिरीन्द्र = गिरि + इन्द्र

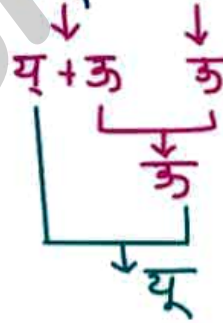
रज्जनी + इश = रज्जनीश

महीन्द्र = मही + इन्द्र

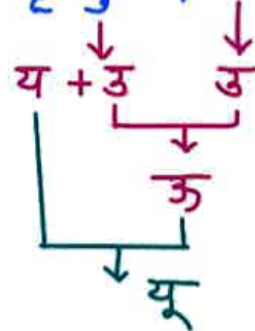
श्री + ईश = श्रीश

• उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

सरयूर्मि = सरयू + ऊर्मि



• मृत्युपरांत = मृत्यु + उपरान्त



विद्युदय = विद्यु + उदय

• ऋ + ऋ = ऋ

पितृणाम् = पितृ + ऋणाम्

↓      ↓  
त + ऋ ऋ = ऋ

Note: जहाँ से शब्द दूर रहा है अगर वहाँ **त, नी**

**२, ण** दिख रहे हैं तो मान लेना कि ये दीर्घ

संधि है।

**दीर्घ संधि के उदाहरण :**

अन्नाभाव = अन्नाभाव (अ + अ = आ)

चरणामृत = चरण + अमृत

स्वर्णविसर = स्वर्ण + अवसर

रत्नाकर = रत्न + आकर (अ + आ = आ)

कुशासन = कुश + आसन

शुभागमन = शुभ + आगमन

पुस्ताकालय = पुस्तक + आलय

नित्यानन्द = नित्य + आनन्द

गर्भस्थान = गर्भ + आस्थान

आमाशय = आम + आशय

पुरावशेष = पुरा + अवशेष (आ + अ = आ)

कदापि = कदा + अपि

विद्यार्थी = विद्या + अर्थी

तथापि = तथा + अपि

आज्ञानुसार = आज्ञा + अनुसार

परीक्षार्थी = परीक्षा + अर्थी

शिक्षार्थी = शिक्षा + अर्थी

विद्याभ्यास = विद्या + अभ्यास (आ + आ = आ)

विद्यालय = विद्या + आलय

वातलिप = वार्ता + आलाप

प्रेक्षागार = प्रेक्षा + आगार

महाशय = महा + आशय

रचनात्मक = रचना + आत्मक

• कवीन्द्र = कवि + इन्द्र (इ + इ = ई)

रवीन्द्र = रवि + इन्द्र

अभीष्ट = अभि + इष्ट

अतीत = अति + इत

अधीक्षता = अधि + इक्षता

कपीन्द्र = कपि + इन्द्र

• हरीश = हरि + ईश (इ + ई = ई)

कवीश = कवि + ईश

परीक्षण = परि + ईक्षण

मुनीश्वर = मुनि + ईश्वर

ई + इ = ई

महीन्द्र = मही + इन्द्र

लक्ष्मीच्छा = लक्ष्मी + इच्छा

ई + ई = ई

रजनीश = रजनी + ईश

पृथ्वीश = पृथ्वी + ईश

उ + उ = ऊ

भानूदय = भानु + उदय

मृत्यूपरान्त = मृत्यु + उपरान्त

सूक्ति = सु + उक्ति

लघूक्ति = लघु + उक्ति

उ + ऊ = ऊ

लघूर्मि = लघु + ऊर्मि

मंजूषा = मंजु + ऊषा

ऊ + उ = ऊ

गुरुपदेश = गुरु + उपदेश

भूत्तम = भू + उत्तम

वधूत्सव = वधू + उत्सव

ऋ + ऋ = ऋ

मातृ + ऋणाम् = मातृणाम्

होतृकार = होतृ + ऋकार



## २. गुण संधि :

जहाँ से शब्द टूटता है अगर वहाँ पर १, १, ८ मात्राएँ दिख रही हों तो गुण स्वर संधि कहेंगे।

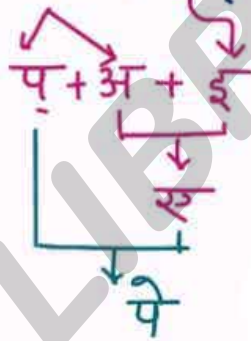
$$अ/आ + इ/ई = ए = १$$

$$अ/आ + उ/ऊ = ओ = १$$

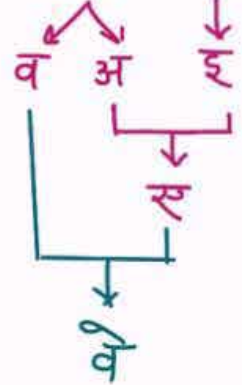
$$अ/आ + ऋ = अर = ८$$

१. अ + इ = ए

पुष्पेन्द्र = पुष्प + इन्द्र



स्वेच्छा = स्व + इच्छा



यथैष्ठ = यथा + इष्ट



देवेन्द्र = देव + इन्द्र

नरेन्द्र = नर + इन्द्र

प्रेत = प्र + इत

उपेन्द्र = उप + इन्द्र



अ + ई = ए

सुरेश = सुर + ईश

नरेश = नर + ईश

गणेश = गण + ईश

परमेश्वर = परम + ईश्वर

आ + इ = ए

महेश्वर = महा + ईश्वर

अ + उ = ओ

सूर्योदय = सूर्य + उदय

चन्द्रोदय = चन्द्र + उदय

परोपकार = पर + उपकार

परमोत्सव = परम + उत्सव

लोकोपयोग = लोक + उपयोग

आ + ई = ए

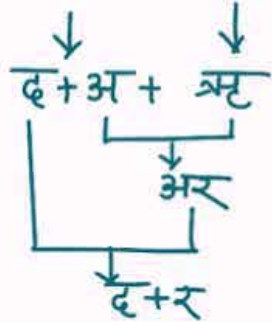
रमेश = रमा + ईश

महेश्वर = महा + ईश्वर

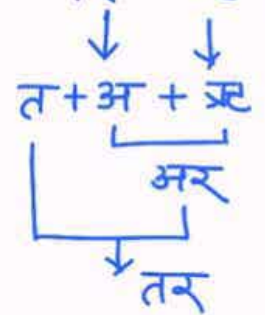
महेश = महा + ईश

शकेश = शका + ईश

वेदर्वि = वेद + ऋषि



सप्तर्वि = सप्त + ऋषि



### 3. वृद्धि संधि :

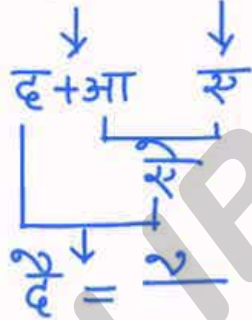
जब अ / आ के बाद र या रे आये तब दोनों (अ+र  
अथवा अ+रे) के स्थान पर 'रे' और जब ओ अथवा  
औ आये तब दोनों स्थान में " औ " की वृद्धि हो जाती है।

$$अ / आ + र / रे = रे = \underline{२}$$

$$अ / आ + ओ / औ = औ = \underline{३}$$

उदाहरण :

$$\text{सदैव} = \text{सदा} + \text{रुव}$$



$$\text{तथैव} = \text{तथा} + \text{रुव}$$

$$\text{वनोषधि} = \text{वन} + \text{ओषधि}$$

$$\text{दिनैक} = \text{दिन} + \text{रुक}$$

(अ + रु = रे)

वृद्धि संधि के उदाहरण

$$\text{दैवेश्वर्य} = \text{देव} + \text{रैश्वर्य}$$

(अ+रे=रै)

$$\text{मतैव्य} = \text{मत} + \text{रैव्य}$$

(अ+रे=रै)

$$\text{सदैव} = \text{सदा} + \text{रुव}$$

(आ+र)

#### 4. यण संधि :

जहाँ से शब्द (संधि) टूट रही हो अगर वहाँ य, र, व से पहले आधा वर्ण दिखाई दे रहा है तो वहाँ यण संधि होगी।

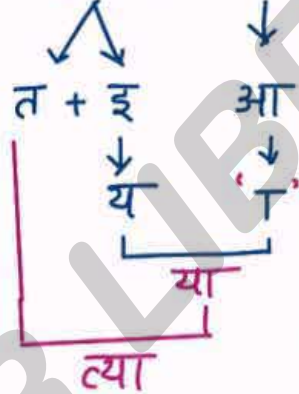
इ/ई + अ/आ/उ/ऊ/ऋ = य्

उ/ऊ + अ + आ/इ/ई/ऋ = व्

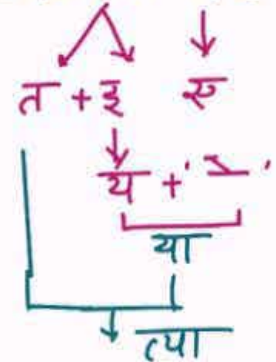
ऋ + अ/आ/इ + ई/उ/ऊ = र्

यण संधि के उदाहरण :

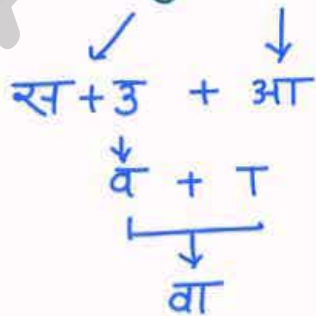
इत्यादि = इति + आदि



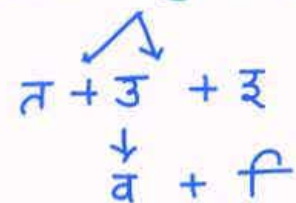
प्रत्येक = प्रति + शक



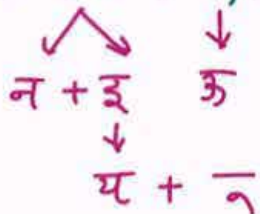
स्वागत = सु + आगत



धात्विक = धातु + इरु



न्यून = नि + ऊन





## 5. अयाधि संधि :

रु, रै, ओ अथवा औ के बाद जब कोई स्वर आता है तब 'रु' के स्थान पर 'अय' और औ के स्थान पर 'अव', रै के स्थान पर 'आय' तथा औ के स्थान पर आव् हो जाता है।

उदाहरण : रु + अ = अय + अ = अय

नयन = नै + अन

शयन = शे + अन

चयन = चै + अन

रै + अ = आय + अ = आय

औ + अ = अव् + अ = अव

गायक = गै + अक

पो + अन = पवन

विधायक = विधै + अक

भो + अन = भवन

नायक = नै + अक

ओ + इ = अव + इ = अवि

गायन = गै + रन

पवित = पो + इ

## ३. व्यञ्जन संधि

जिन दो वर्णों की संधि में, पहला वर्ण यदि व्यञ्जन हो और दूसरा वर्ण स्वर हो। तो उससे उत्पन्न विकार को व्यञ्जन संधि कहते हैं।

Note। यदि क च ट त प के पश्चात् किसी वर्ण का ३<sup>rd</sup> या ५<sup>th</sup> वर्ण आये तो क च ट त प के स्थान पर अपने ही वर्ण का तीसरा वर्ण हो जाता है। ग् ज्ञ ड् ढ् ब्

‘क’ वर्ण

दिग्गज = दिक् + गज

दिग्म्बर = दिक् + अम्बर

वागीश = वाक् + ईश

वाग्दान = वाक् + दान

वाग्दत्त = वाक् + दत्त

‘त’ वर्ण

सदाचार = सत् + आचार

भगवद्गीता = भगवत् + गीता

उद्योग = उत + योग

सदानन्द = सत् + आनन्द

उदघात = उत् + घात

उद्गम = उत + गम

३. त या द के बाद (ज अथवा झ) हो तो त या द के स्थान पर ‘ज’ हो जाता है।

सज्जन = सत् + जन

उज्ज्वल = उत् + ज्वल

विपज्जाल = विपद् + जाल

3. त या द के बाद ल हो तो त् या द् के स्थान पर ल् हो जाता है।

तल्लीन = तत् + लीन

उल्लंघन = उत् + लंघन

उल्लेख = उत् + लेख

उल्लास = उत् + लास

4. 'छ' के पहले यदि कोई स्वर हो तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है।

परि + छेद = परिच्छेद

आच्छादन = आ + छादन

विच्छेद = वि + छेद

अनुच्छेद = अनु + छेद

5. त या द के बाद ह हो तो त् या द् के स्थान पर द और ह के स्थान पर ध् हो जाता है।

उद्धार = उत् + हार

तद्धित = तत् + हित

उद्धरण = उत् + हरण



### 3. विसर्गसंधि

विसर्ग के साथ यदि ह्रस्व अपवा व्यंजन को मिलाने से जो विकार उत्पन्न होता है। वह विसर्गसंधि है।

Note 1. विसर्ग के बाद यदि 'क' 'ख' 'प' 'फ' हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता।

दुःख = दुः + ख

प्रातःकाल = प्रातः + काल

अन्तःकरण = अन्त + करण

परन्तु कुछ शब्दों में विसर्ग (:) का 'स' हो जाता है।

पुरस्कार = पुरः + कार

नमस्कार = नमः + कार

भास्कर = भाः + कर

तिरस्कार = तिरः + कार

Note 2. यदि विसर्ग के बाद 'च' या 'छ' हो तो विसर्ग का 'श' हो जाता है।

निश्चल = निः + चल

मनस्ताप = मनः + ताप

निश्चय = निः + चय

निस्तार = निः + तार

दुष्ट = दुः + ट

निश्चल = निः + चल

Note 3. यदि विसर्ग के बाद श, ष, स आता है तो विसर्ग ज्यों का त्यों ही रहता है। अर्थात् उससे स्थान पर आगे का अक्षर हो जाता है।

दुः + शासन = दुःशासन या दुःशासन

निःशंक या निःशंक = निः + शंक

निःसंदेह या निःसंदेह = निः + संदेह

हरिश्चोते या हरिः चोते = हरिः + चोते

Note 4: यदि विसर्ग के पहले 'इं' या 'उं' हो और विसर्ग के बाद 'क' ख या प फ हो तो इनके विसर्ग के बदले 'ष' हो जाता है।

निष्कपट = निः + कपट

दुष्कर्म = दुः + कर्म

निष्पाप = निः + पाप

दुष्प्रकृति = दुः + प्रकृति

दुष्फल = दुः + फल

निष्फल = निः + फल

## उपसर्ग-प्रत्यय :

उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी शब्द में शब्द से पहले जुड़कर उससे अर्थ में परिवर्तन उत्पन्न करते हैं।

- \* उपसर्ग अर्थयुक्त होते हैं किंतु इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता
- \* ये अन्य शब्दों के पूर्व में जुड़कर उनका अर्थ बदल देते हैं।

### उपसर्ग के भेद

- (1) हिन्दी उपसर्ग
- (2) संस्कृत उपसर्ग
- (3) उर्दू उपसर्ग

#### (1) हिन्दी उपसर्ग

अ, अध, अन, उ, उन, औ (अव)

कु (क), दु, नि, बि, भर, स, सु



: हिंदी उपसर्ग वाले शब्द :

(1) 'अ'  $\Rightarrow$  अभाव, निषेध  $\Rightarrow$   
अलग, अज्ञान,  
अनोखा, अटल, अशोक,

(2) अद्य  $\Rightarrow$  आधा (अर्ध)  
अद्यजला, अद्यपका, अद्यकचरा

(3) अन  $\Rightarrow$  अभाव, अनजान, निषेध  
अनपढ़, अनेक, अनादर  
अनादि, अनसुनि, अनहित  
अनिच्छा

(5) सु = सुन्दर / अच्छा  
सुशील, सुबुद्धि, सुलोचना  
सुपूत, सुचैत, सुडोल

(6) पर = पराया / दूसरी पीढ़ी  
परदेश, परलोक, परदादा

(6) 'नि'  $\Rightarrow$  निषेध / बिना / रहित

निकम्मा , निहत्था , निडर  
निखरा , निर्लज्ज , निधङ्क

(7) भर : पूरा / ठीक

भर-पेट भरसक  
भरपूर भरमार

(8) कु (क) = खराब / हीन / बुरा

कु कर्म कुपात्र  
कुरूप कुपूत  
कुसंगति

(9) उन = रुक कम

उत्तीस अनतीस  
उनचास उनसठ

(10) दु = बुरा / हीन

दुबला दुर्गती दुगुना दुमंजिला

\* संस्कृत उपसर्ग :

१. अति अधिक / सीमा से परे

अतिक्रमण अतिरिक्त , अतिशय

अत्याचार , अत्यन्त

२. अधि = ऊपर / स्थान में श्रेष्ठ

अधिकरण अधिकार अध्यक्ष

अधिशाषी अधिभार

३. अनु = पीछे / समान

अनुक्रम अनुचर अनुज

अनुरूप अनुस्वार अनुशासन

अनुकरण अनुशब्दा

४. अप ⇒ बुरा , हीन , विरुद्ध , अभाव , विपरीत

अपहरण अपशब्द अपशकुन

अपभ्रंश अपमान अपकीर्ति

अपव्यय अपपश अपकार



(5) अव नीचे, हीन, अभाव, पतन

अवगत

, अवनत

अवस्था

अवगुण

अवनति

अवरोध

(6) उप निकट/ दौटा

उपकार

उपदेश

उपभेद

उपयोग

उपवेद

उपनिवेश

उपासना

उपग्रह

उपहार

(7) निर भीतर, नीचे, बाहर, निषेध

निकृष्ट, निर्बल, निर्भय, निर्दय

(8) नि नीचे/ निपुणता के साथ

निवारण

नियम

निवास

निशङ्कण

(9) प्रति विरुद्ध, विरोध

प्रतिकूल

प्रतिष्ठा

प्रतिवादी

प्रतिनिधि

प्रत्यक्ष

✱ उर्दू उपसर्ग ✱

(1) अल निश्चित

अलगरज अलबत्ता

(2) कम षोड़ा, हीन

कमउम्र कमजोर कमअबल कमसमझ  
कमबरलत कमसिन

(3) खुश अच्छा

खुशबू , खुशदिल , खुश-किस्मत,  
खुशमिजाज, खुशखबरी , खुशहाल

(4) गैर भिन्न, विरुद्ध

गैरमुल्क , गैरसरकारी , गैरकानूनी

(5) बे बिना

बेइमान, बेदर्द, बेअबल, बेवकूफ, बेरहम  
बेइज्जत , बेचारा, बैचैन, बेहोश

## \* प्रत्यय \*

ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में लगकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।  
उपसर्ग कहलाते हैं।

### प्रत्यय के भेद

1. कृत प्रत्यय

2. तद्धित प्रत्यय

(1) कृत प्रत्यय :

ऐसे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप के साथ लगकर नये शब्दों का निर्माण करते हैं। उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं।

कृत प्रत्यय      निर्मित शब्द

सार

मिलनसार

आऊ

चलाऊ, बिकाऊ, कमाऊ

आई/ई

गढाई, चराई, रुलाई

आन

उठान, मिलान, लगान

आव

उतराव, घुमाव, चलाव, कटाव

आस

निकास, हुलास, विकास, व्यास

त

खपत, बचत, लागत, जपत



वट = लिखावट, सजावट, बनावट, पकावट, रुकावट

अक = चालक, लेखक, भिक्षुक, पालक, पाठक

आक = तैराक, चालाक

अक्कड़ = घुमक्कड़, भूलक्कड़

आवना = डरावना, लुभावना

आहत = ध्वराहत, चिल्लाहत

(2) तद्धित प्रत्ययः

जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के अंत में लगकर नये शब्द बनाते हैं।

आ	भूखा, देखा
आर	लुहार, सुनार
इया	मुखिया, रसोइया
हारा	स्वहारा, लकड़हारा
आना	रोजाना
आरी	जुआरी
आई	बुराई, चढाई, पढाई
ई	गरमी, गरीबी
ओला	खटौला, संपोला

संस्कृत शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय

अक	-	रक्षक, भक्षक, लेखक
मान	-	श्रीमान, बुद्धिमान
त्व	-	पुरुषत्व, ममत्व
इमा	-	महिमा
इत	-	पुष्पित, अंकुरित
मय	-	जलमय, सुखमय
अना	-	वन्दना, तुलना
अन	-	शासन, पालन
इय	-	राष्ट्रीय, राजकीय

\* अरबी-फारसी शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय

गार	⇒	मददगार, गुनाहगार
दार	⇒	मालदार, शानदार
ईन	⇒	शौकीन
मंद	⇒	अबलमंद, जरूरतमंद
पोश	⇒	तरबपोश, मेजपोश
नाक	⇒	दर्दनाक, खौफनाक